Date
16 May 2020

B.Ed - IInd

Sub - Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement.

जल संचय / संरक्षण

जल पृथ्वी पर सबसे कीमती साधन है। पृथ्वी पर जितना पानी है उसका सिर्फ तीन फीसदी हिस्सा ही सीधे इस्तेमाल के लायक है। इसतरह जल में भी सिर्फ .26% ही शुद्ध जल है, जिसको आदमी इस्तेमाल कर सकता है। पृथ्वी के जल का बड़ा हिस्सा यानी 97.1% समुद्र का खारा पानी है। बाकी जल या तो पहाड़ों की चोटियों पर जमी हुई बर्फ की शक्ल में है या जमीन के नीचे भूगर्भ जल की शक्ल में है। जल वायुमण्डल का ऐसा स्रोत है जो इस्तेमाल के बाद फिर जल बनता रहता है तो भी इसकी मात्रा सीमित है। हमारी पृथ्वी पर शुद्ध जल की कुल मात्रा स्थिर रहती है, क्योंकि जल हमेशा खर्च होता है और बनता रहता है और प्रकृति को अपने ही खर्च द्वारा संचालित वाटर पम्प है, जो इस जल को चलाता रहता है इसको जल-चक्र कहते हैं। इसके चार मुख्य अंग इस प्रकार है-

I वाष्पीकरण और श्वासीकरण (वाष्पोश्वासीकरण) = मिट्टी और जल स्रोतों से वाष्पीकरण + पौधों से श्वासीकरण।

II पसीना निकलना

III - सतह पर और सतह के नीचे का पानी

IV. वायुमण्डलीय जल / अदृश्य वाष्प

हर वर्ष महासागरों से करीब 505000 घन किमी. जल भाप बनकर उड़ता है। इस भाप की राशि से लगभग 110000 घन किमी. शुद्ध जल पसीज कर जमीन पर गिरता है इससे धरती पर जमीन की नीचे जल के भण्डार में कमी की पूर्ति हो जाती है फिर यह जल वापस सागर में जा मिलता है। इसी तरह जल-चक्र पूरा हो जाता है। मानवीय क्रिया कलापों जैसे भूगर्भ जल स्रोत से अत्यधिक पानी निकालना, खेती का अनुचित तरीका,

Scanned with CamScanner

जल प्रदूषण, जल का अति दोहन आदि से जल-चक्र और जल धारा का स्थानीय जल संतुलन बिगड़ जाता है।

जल के स्रोत	जल की मात्रा घनमील में	कुल जल का %
सागर	317000000	97.24
बर्फ चोटियाँ, बर्फनद	7000000	2.14
भूगर्भ जल	2000000	.61
शुद्ध जल के झील	30000	.009
जमीनी सागर	25000	.008
मिट्टी की नमी	16000	.005
वायुमण्डल	31000	.001
नदियाँ	300	.0001
जल की कुल मात्रा	=326000000	=100.0

Scanned with CamScanner